मनोविज्ञान की प्रारम्भिक अवस्था दार्शनिकों द्वारा दी गई परिभाषा से प्रारम्भ होता है। इस अवस्था में मनोविज्ञान का विषय वस्तु आत्मा के अध्ययन के रूप में होता है। जैसा कि प्लेटो और अरस्तू जैसे यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को Psychology का हिन्दी रूपान्तर माना जिसका निर्माण Psyche + Logos शब्दों के मेल से हुआ है। Psyche का शाब्दिक अर्थ Soul या आत्मा से लिया गया तथा Logos का अर्थ अध्ययन या विवेचन है। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ के आधार पर मनोविज्ञान को दार्शनिकों ने "Psychology is the science of soul." के रूप में परिभाषित किया जिसकी विषय-वस्तु आत्मा का अध्ययन करना था। आत्मा से एक 'निराकार मनुष्य' की परिकल्पना परिलक्षित होती है, क्योंकि आत्मा एक अमूर्त वस्तु है जिसका कोई स्पष्ट आकार नहीं होता है। दार्शनिकों की यह मान्यता विज्ञान की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है भले ही यह दर्शन का एक पहलू हो सकता है।

वैज्ञानिक प्रगति ने मनोविज्ञान से सम्बन्धित उपर्युक्त विचारधारा को नकारते हुए मनोविज्ञान को वैज्ञानिक आधार देने प्रयास को अलग-अलग परिभाषा विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा देने का प्रयास किया गया है।

दार्शनिकों द्वारा दी गई उपर्युक्त परिभाषा के संदर्भ को संशोधित करते हुए इन्हें एक परिभाषा दी किया गया जिसमें Psychology को

इस विधि में प्राणी के चेतन-अनुभूति के आधार पर प्रगट व्यवहारों का अध्ययन दूसरे व्यक्ति (observer) के निरीक्षण द्वारा किया जाता है। इसमें जिस प्राणी के व्यवहारों का निरीक्षण किया जाता उसे (Subject) विषय कहा जाता है और निरीक्षणकर्ता को observer कहा जाता है। चेतन अनुभूति का व्यवहारात्मक प्रकटीकरण दो तरह से होता है।

(i) आन्तरिक :— चेतन-अनुभूति का व्यवहारात्मक प्रकटीकरण आन्तरिक भी होता है यथा भय या क्रोध की अनुभूति में हृदय की गति, रक्तचाप तथा मस्तिष्कीय तरंगों में व्यवहारात्मक प्रतिक्रिया होती है जिसे खुली आँखों से नहीं देखा जा सकता है। इनका निरीक्षण कुछ यन्त्रों, यथा stethoscope, sphygmomanometer, Electric Encyphalogram आदि से किया जाता है।

(ii) वाह्य :— वाह्य व्यवहारों के प्रकटीकरण को खुली आँखों से निरीक्षणकर्ता निरीक्षण उसके स्वाभाविक परिस्थिति में करता है। जैसे मुस्कानुभूति में परिवर्तन या मुद्रा में परिवर्तन को खुली आँखों से देखा जा सकता है।

वाह्य निरीक्षण विधि द्वारा वाह्य तथा आन्तरिक व्यवहारों का अध्ययन (निरीक्षण) क्रमबद्ध एवं वस्तुनिष्ठ ढंग से किया जाता है। Morgan ने इसे क्रमबद्ध निरीक्षण (Systematic Observation) की संज्ञा दिया है। Objective observation विधि दो प्रकार का होता है :—

(1) स्वाभाविक निरीक्षण (Natural observation) :— स्वाभाविक वाह्य निरीक्षण में स्वाभाविक

आधुनिक सभी मनोवैज्ञानिकों द्वारा मनोविज्ञान के सम्बन्ध में दी गई परिभाषाओं का जब गहराई से अध्ययन किया जाता है तब स्पष्ट रूप से यह दृष्टिगोचर होता है मनोविज्ञान का विषय-वस्तु चेतन अनुभूतियाँ हैं और इन अनुभूतियों को उत्पन्न होने में जिन-जिन तत्वों का सहयोग होता है उनकी संरचना ही चेतन-अनुभूति है। इसी लिए इन्हें संरचनावादी मनोवैज्ञानिक की संज्ञा दी गई है। चेतन-अनुभूति का अध्ययन केवल Introspection द्वारा ही किया जा सकता है। परन्तु Wundt ने ही सबसे पहले चेतन-अनुभूतियों पर प्रयोगात्मक अध्ययन कर मनोविज्ञान को वैज्ञानिक धरातल पर खड़ा किया।

20 वीं शताब्दी में जब Watson द्वारा Behaviourism की स्थापना किया गया तो मनोविज्ञान की संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषा को एकांगी करार देते हुए कहा गया कि व्यवहार के बिना अनुभूति की कल्पना करना युक्तिसंगत नहीं प्रतीत होता है। यद्यपि व्यवहारवादियों ने भी व्यवहार के लिए अनुभूति को ही आधार माना है परन्तु उनके अनुसार मनोविज्ञान व्यवहारों का अध्ययन करने वाला विषय है इस तरह इन लोगों ने व्यवहार को ही मनोविज्ञान का विषयवस्तु के रूप में स्वीकार किया है जैसा कि Mc Dougall ने परिभाषित करते हुए कहा कि :—

"Psychology is the positive empirical science of the behaviour of living any creature."

इस परिभाषा का समर्थन Pillsbury द्वारा दी गई निम्नलिखित परिभाषा से भी होता है :—

"Psychology may be most satisfactorily defined as the science of human behaviour."

संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाएं यदि एकांगी हैं तो व्यवहारवादियों द्वारा दी गई मनोविज्ञान की परिभाषाएं भी एकांगी एवं एकपक्षीय प्रतीत होता है क्योंकि अनुभूति के बिना व्यवहार की कल्पना नहीं की जा सकती है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि मनोविज्ञान के सम्प्रदायों के विचारधाराओं द्वारा दी गई परिभाषा मनोविज्ञान की सफल एवं सन्तुलित धारणा बनाने में पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाता है।

मनोविज्ञान की सन्तुलित धारणा आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाएं ही सफल प्रतीत होता है। जैसा कि आधुनिक परिभाषा में कहा गया है कि :—

"Psychology is a positive science of experience and behaviour of the organism in relation to environment."

नार्मन Munn के अनुसार :—

"Psychology is concerned with the over-all adjustment of the organism to the environment."

Kagan & Havemann ने मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा कि :—

"Psychology is the science that systematically studies and attempts to explain observable behaviour and its relationship to the unseen mental processes that go on inside the organism and to external events in the environment."

इस प्रकार आधुनिक परिभाषाओं में खासकर Kagan & Havemann द्वारा दी गई मनोविज्ञान की परिभाषा मनोविज्ञान की सन्तुलित धारणा बनाने में सफल प्रतीत होता है। क्योंकि इन परिभाषाओं के अनुसार मनोविज्ञान न तो केवल आत्मा या मन का विज्ञान है और नहीं केवल अनुभूति अथवा व्यवहार का विज्ञान है बल्कि मनोविज्ञान अनुभूति और व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन प्राणी के वातावरण में करता है। इस प्रकार मनोविज्ञान विषय वस्तु प्राणी की अनुभूति तथा व्यवहार दोनों है। End